श्री हनुमान चालीसा हिंदी में

॥दोहा॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनउं रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

॥चौपाई॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥

महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरण बिराज सुवेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
शंकर सुवन केसरीनन्दन । तेज प्रताप महा जग वन्दन॥

विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया॥

सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा । विकट रुप धरि लंक जरावा॥
भीम रुप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे॥

लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । अस कहि श्री पति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद शारद सहित अहीसा॥

यम कुबेर दिकपाल जहां ते । कवि कोबिद कहि सके कहां ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फ़ल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरणा । तुम रक्षक काहू को डरना॥

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांक तें कांपै॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै । महावीर जब नाम सुनावै॥

नाशै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फ़ल पावै॥

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता । अस बर दीन्ह जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जन्म-जन्म के दुख बिसरावै॥
अन्तकाल रघुबरपुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

जय जय जय हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई॥
जो यह शत बार पाठ कर सोई । छूटहिं बंदि महा सुख होई॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्ध साखी गौरीशा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

॥दोहा॥

पवनतनय संकट हरण, मंगल मूरति रुप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

चालीसा संग्रह -९०+ चालीसायें
आरती संग्रह -१००+ आरतियाँ
Dibhu.com

Shri Hanuman Ji